नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मेट्रो रीजन : आर्थिक विकास के नए इंजन

मध्य प्रदेश अब केवल 'संभावनाओं वाला राज्य' नहीं, बल्कि ठोस योजनाओं और स्पष्ट दृष्टि के साथ विकास की नई परिभाषा गढ़ने की ओर बढ़ रहा है. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा इंदौर मेट्रो रीजन और भोपाल मेट्रो रीजन के गठन की दिशा में उठाए गए कदम इसी बदलते दौर के संकेत हैं. यह निर्णय न केवल शहरी विकास की सोच को नया आयाम देता है, बल्कि 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य में मध्य प्रदेश की निर्णायक भूमिका भी तय करता है.इंदौर और भोपाल पहले से ही राज्य के दो सबसे बड़े आर्थिक, प्रशासनिक और शैक्षणिक केंद्र हैं. लेकिन मेट्रो रीजन की अवधारणा इन शहरों को केवल नगर सीमाओं तक सीमित नहीं रखती, बल्कि आसपास के जिलों, कस्बों और औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़कर एकीकृत आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र (इंटीग्रेटेड इकोनामिक इकोसिस्टम) विकसित करने की दिशा में ले जाती है. यही मॉडल आज दुनिया के विकसित देशों और भारत के अग्रणी राज्यों में विकास का आधार बन चुका है.

इंदौर मेट्रो रीजन मालवा अंचल की आर्थिक रीढ़ को और मजबूत करेगा. औद्योगिक निवेश, लॉजिस्टिक्स, आईटी, स्टार्टअप्स, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को एक साझा प्लेटफॉर्म मिलेगा. पीथमपुर, देवास, उज्जैन जैसे क्षेत्र सीधे तौर पर इस विकास से जुड़ेंगे. इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, ग्रामीण-शहरी संतुलन सुधरेगा और पलायन पर भी अंकुश लगेगा. इंदौर की पहचान अब केवल स्वच्छता तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि वह एक ग्लोबल इन्वेस्टमेंट डेस्टिनेशन के रूप में उभरेगा.वहीं भोपाल मेट्रो रीजन प्रशासनिक राजधानी की भूमिका से आगे बढ़कर नॉलेज, रिसर्च और गवर्नेंस आधारित अर्थव्यवस्था का केंद्र बनेगा. सीहोर, रायसेन, विदिशा जैसे क्षेत्रों को जोड़कर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और ग्रीन इंडस्ट्री को नई दिशा मिलेगी. यह क्षेत्र नीतिगत निर्णयों और निवेश के बीच सेतु का काम करेगा, जिससे योजनाएं कागज से निकलकर जमीन पर तेजी से उतरेंगी.

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह विजन इसलिए भी सराहनीय है क्योंकि इसमें केवल कंक्रीट का विकास नहीं, बल्कि समावेशी और संतुलित विकास की स्पष्ट सोच दिखाई देती है. मेट्रो रीजन का अर्थ केवल बड़ी इमारतें या चौड़ी सड़कें नहीं, बल्कि बेहतर सार्वजनिक परिवहन, नियोजित आवास, पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ अर्थव्यवस्था है. यह वही दृष्टिकोण है जिसकी आज मध्य प्रदेश को आवश्यकता है. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का नेतृत्व राज्य को छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं, बल्कि रीजनल पावरहाउस के रूप में देखने की सोच को दर्शाता है. इंदौर और भोपाल मेट्रो रीजन 'ट्रिपल इंजन सरकार' की अवधारणा को जमीन पर उतारने का सशक्त माध्यम बन सकते हैं—जहां केंद्र, राज्य और स्थानीय निकाय एक ही दिशा में काम करें.

आज जब देश के कई राज्य मेट्रो सिटी मॉडल पर आगे बढ़ रहे हैं, तब मध्य प्रदेश का यह कदम उसे प्रतिस्पर्धा में पीछे नहीं, बल्कि अग्रिम पंक्ति में खड़ा करता है. स्पष्ट है कि इंदौर और भोपाल मेट्रो रीजन आने वाले वर्षों में केवल शहरी विकास की योजनाएं नहीं रहेंगे, बल्कि मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास के असली इंजन साबित होंगे. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह विजन राज्य को आत्मविश्वास, निवेश और अवसरों की नई ऊंचाई पर ले जाने वाला है.

नाम बदलने से क्या नीति बेहतर हो जाती है?

राजीव खण्डेलवाल
(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष नगर सुधार न्यास)

> मनरेगा में कई कमियां वह खामियां थी जो अधिनियम में न होकर होगा उसके लागू करने (एग्जीक्यूशन) में थी और वही समस्या अभी नए अधिनियम में भी बनी रहेगी. इस बात को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है. मात्र नाम बदलने से- न तो नीति बदलती है, न ही नीयत, और न ही ग्रामीण भारत की तकदीर. यदि सचमुच विकसित ग्रामीण भारत का लक्ष्य है, तो- सरल आसानी से बोले जाने वाला नाम, स्पष्ट उद्देश्य मजबूर मजदूरी की मजबूत मजदूरी, और भागीदारी तथा सशक्त ग्राम पंचायत ही उसका आधार हो सकते हैं. अन्यथा- वीबी जी रामजी केवल मनरेगा की जगह एक नया संक्षेप बनकर रह जाएगा और ग्रामीण मजदूर वही का वही.

मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2025) केवल एक योजना नहीं, बल्कि यह ग्रामीण भारत के लिए रोजगार की संवैधानिक गारंटी, पंचायती राज की आत्मा उसकी स्वायत्तता को मजबूती प्रदान करना और राज्य-केंद्र के सहकारी संघवाद का आदेश प्रतीक थी. शायद यह भारत की पहली सरकारी योजना है, जिसके जलेबी की तरह सीधे नाम बोलने, समझने और याद रखने के लिए प्रत्येक नागरिक सहित कानून निर्माताओं तक को अनुभवी प्रशिक्षित अध्यापक की कक्षा ज्वाइन करनी पड़े ? जिसे याद करना मुश्किल है, उसे झेलना कितना मुश्किल होगा ?

प्रश्न यह है कि- इस जटिल नाम की आवश्यकता क्या थी ? क्या इससे योजना अधिक प्रभावी हो जाएगी ? या फिर उद्देश्य केवल मनरेगा जैसे स्थापित सहज प्रचलित नाम को मिटा कर अपनी कागज के नांव चलाना जैसा है ? गांधी जी का अंतिम शब्द हे राम, शिष्टाचार का कथन जय श्री राम से रोजगार दिलाने वाले जी राम जी की ओर जाने का सरल व सुगम रास्ता भी सरकार को मालूम नहीं है. अधिनियम का नाम उन महात्मा गांधी के नाम से था जिनके जीवन के अंतिम शब्द है राम थे. अधिनियम में नाम की एक धारा जोड़कर योजना का नाम जी राम जी अधिनियम के नाम में संशोधन किये बिना, किया जा सकता था.योजना के नाम में ही 'रोजगार' और 'आजीविका' दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग किया गया है, जबकि व्यवहारिक और भाषाई दृष्टि से दोनों का अर्थ लगभग समान है.

यदि दोनों में कोई मौलिक अंतर है- तो सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि रोजगार क्या देगा और आजीविका क्या ? और यदि अंतर नहीं है, तो यह शब्दाडंबर क्यों ? नीति निर्माण में यह अस्पष्टता गंभीर संकेत देती है. लेकिन सरकार तो सूरदास की काली कमरी ओढ़े बैठी है, जिस पर चले ना दूजा रंग. प्रश्न स्वाभाविक है- क्या 'महात्मा गांधी' का नाम इसलिए हटाया गया क्योंकि उनके आगे 'गांधी' लिखा है ? मनरेगा केवल एक नाम नहीं था, वह ग्राम स्वराज, श्रम की गरिमा और राज्य की जवाबदेही का प्रतीक था. नई योजना में राज्यों का अंशदान- 10प्रतिशत से बिना किसी कारणवश चार गुना बढ़ाकर 40प्रतिशत कर दिया गया है. जब अधिकांश राज्य पहले से भारी वित्तीय संकट में हैं. केंद्र की देनदारियों का इंतजार कर रहे हैं.

ऐसे में यह प्रावधान योजना को कागज पर जीवित और जमीन पर मृत -प्राय बना देगा. एक ओर सरकार केन्द्रीकृत राज के सिद्धांत की ओर बढा रही है, दूसरी ओर राज्यों और ग्राम पंचायतों के अधिकार समाप्त कर रही है. अब तक-ग्राम पंचायतों को यह अधिकार था कि वे अपने क्षेत्र में कौन से कार्य होंगे, यह तय करें जो व्यवहारिक था क्योंकि इससे ग्रामीण विकास का नक्शा ज्यादा अच्छे तरीके से बन पाता. नई योजना में-रोजगार केवल केंद्र सरकार द्वारा अनुसूचित ग्रामीण क्षेत्रों में ही उपलब्ध होगा. यह सीधे.सीधे-पंचायती राज व्यवस्था की स्वायत्तता पर डाका है. वर्तमान स्थिति यह है कि- फरवरी 2006 को जब यह मनरेगा कानून लागू किया गया था तब प्रारंभिक 10 वर्षों को छोड़ दें जब यह योजना चरणबद्ध तरीके से लागू की गई थी और कोरोना काल की आसमानी आफत को छोड़ दें तो 100 दिन की सुल्तानी गारंटी का औसत 50 दिन से भी आता है. ऐसी स्थिति में- 100 से 125 दिन के काम की घोषणा के कसीदे पढ़े जा रहे हैं वह केवल एक थोथा चना बाजे घना आभासी खबाब नहीं तो क्या है ? एक कागजी घोड़ा नहीं तो क्या है ?

सबसे गंभीर और चौंकाने वाला तथ्य यह है कि- न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने पर एक शब्द भी नहीं.महंगाई, जीवन-यापन लागत, संकट- इन सबके बीच मजदूरी में कोई वृद्धि न होना बताता है कि योजना का (केन्द्र) श्रमिक नहीं, संरचना है, न्यूनतम दिनों रोजगार गारंटी का केवल योजना की ब्रांडिंग ज्यादा है. रोजगार की गारंटी देने वाले कानून में कृषि कार्य के पीक मौसम में 60 दिन के रोजगार न देने की गारंटी जरूर दी गई है. कृषि कार्य के लिए मजदूर उपलब्ध होने के लिए मांग और पूर्ति के सिद्धांत को क्यों नहीं लागू होने दिया गया ?

विंध्य की डायरी

हवाई चप्पल पहनने वाले रीवा से उड़ेंगे विदेश के लिये

डॉ रवि तिवारी

वर्षो पूर्व जब रीवा में हवाई पट्टी की आधारशिला रखी गई थी तब किसी ने नही सोचा था कि यहा के हवाई चप्पल पहनने वाले आम लोग अपनी धरती से विदेश की धरती तक सफर कर सकेंगे. खुली आंखो से देखा गया सपना क्रमबद्ध रूप में साकार हो रहा है. अभी बहुत कुछ देखना बाकी है. एयरपोर्ट के निर्माण के बाद यह सपना था कि यही से विदेशो का सफर हो. एक साल के अंदर यह सपना भी पूरा हो रहा है. रीवा एयरपोर्ट से अब विंध्य के लोग दुनिया भर के देशो की यात्रा कर सकेगे. इसके लिये इंटरनेशनल कनेक्टिविटी मिलेगी. रीवा से इंदौर के रास्ते दूसरे देशो की फ्लाइट से कनेक्ट किया जाएगा.

अब औद्योगिक, पर्यटन क्रांति के साथ कई तरह के विकास के द्वार खुलेगे. रीवा अब हवाई कनेक्टिविटी के क्षेत्र में लगातार मजबूत हो रहा है. एयरपोर्ट के निर्माण के बाद अब रीवा देश के प्रमुख शहरो से सीधे जुड़ रहा है. यहा से पहले दिल्ली और भोपाल के लिये उड़ान शुरू हो चुकी है और अब 22 दिसम्बर सोमवार से इंदौर के लिये नियमित उड़ान सेवा शुरू होने जा रही है. रीवा और इंदौर के बीच शुरू होने से केवल प्रदेश के अंदर ही नही बल्कि अन्य देशो की यात्रा भी सुगम हो जाएगी. इंडिगो ने रीवा से इंदौर के लिये नियमित हवाई सेवा शुरू की है और इंडिगो के माध्यम से विंध्य के यात्रियो को थाईलैंड, अबूधाबी जैसे 12 देशो का सफर आसान होगा. इंडिगो ने रीवा-इंदौर फ्लाईट से कनेक्टिविटी देने के लिये 12 देशो के लिये बुकिंग शुरू की है.

खरमास के बाद राजनैतिक नियुक्तियों की उम्मीद

प्रदेश में डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में बनी सरकार के दो साल पूरे हो गये है. विधानसभा चुनाव के बाद लोकसभा चुनाव में भी विंध्य ने प्रदेश में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के प्रति जिस प्रकार से पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है. उसके बाद से यह कयास लगाए जा रहे हैं कि प्रदेश में होने वाली राजनैतिक नियुक्तियों में विंध्य को विशेष महत्व मिल सकता है. उम्मीद है कि खरमास के बाद निगम मंडल में नियुक्ति के साथ मंत्री मंडल का विस्तार हो सकता है. जिसमें नए चेहरो को शामिल किया जा सकता है. पार्टी के सक्षम नेता पूरी ताकत से अपनी गोटी फिट करने में लगे है.

प्राधिकरण के अलावा प्रदेश के कई निगम मंडल ऐसे हैं जिनके जिम्मेदारो के नाम अभी तक तय नही हुए है. संगठन से सत्ता की इस पहली सीढ़ी में चढने के लिए तैयार बैठे नेता भी फिलहाल चुप्पी साधे हुए हैं. अब देखना यह है कि कब किसको कहाँ मौका मिलता है. खरमास के बाद भाजपा सरकार कुछ नया कर सकती है. विंध्य के सक्रिय नेता पूरे प्रयास से जुटे हुए है और सत्ता-संगठन की परिक्रमा करने में लगे हुए है.

दिल्ली का सफर बहुत कठिन

ठंड अपने चरम पर है कोहरा भी कोई कसर नही छोड़ रहा. सडक़ कोहरे की चादर से लिपटी रहती है. हर कोई प्रभावित है फिर चाहे ट्रेन हो या हवाई जहाज. वैसे भी इस समय दिल्ली का सफर बहुत कठिन हो गया है. निर्धारित समय पर ट्रेन नही पहुंच रही है. रीवा-आनंद बिहार ट्रेन घने कोहरे के चलते 8 से 10 घंटे लेट रीवा पहुंच रही है, यात्रियो की भारी फजीहत हो रही है. दरअसल उत्तर भारत में पडने वाले घने कोहरे के कारण यह ट्रेन प्रभावित हो रही है. पिछले एक सप्ताह से अपने निर्धारित समय पर नही पहुंच रही है. विंध्य की अति महत्वपूर्ण यह ट्रेन है जिससे लोग दिल्ली तक का सफर तय करते है पर इस समय सफर बहुत ही दुखदायी है. आनंद बिहार स्टेशन से समय से चलने पर रीवा 11.10 बजे पहुंचना होता है पर ट्रेन रात को पहुंचती है. आने-जाने वाले दोनो तरफ के यात्रियो के लिये इस समय मुसीबत है.

शिक्षकों पर चुनाव ड्यूटी का भार

बच्चों के तनाव के लिए आमतौर पर शिक्षकों व पालकों को जिम्मेदार ठहराया जाता है लेकिन शिक्षकों के तनाव के बारे में कोई भी नहीं सोचता. चाहे चुनाव हो या मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण, इस काम का बोझ शिक्षकों पर ही डाला जाता है. उन्हें बूथ लेवल अधिकारी या बीएलओ की ड्यूटी दे दी जाती है. उन पर तेजी से मतदाता सूची अपडेट करने की जिम्मेदारी रहती है. विलंब या गलती होने पर कार्रवाई का भय बना रहता है. इस तनाव की वजह से अनेक शिक्षक बीमार पड़ गए या उनकी मौत हो गई.

हर चुनाव में सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को काम पर लगा दिया जाता है. उनकी इलेक्शन ड्यूटी की वजह से बच्चों की पढ़ाई पर बुरा असर पड़ता है. निजी स्कूलों के शिक्षकों पर ऐसी कोई बाध्यता प्रायः नहीं रहती. प्राइवेट स्कूल के बच्चों को पढ़ाई का नुकसान नहीं उठाना पड़ता. आजादी के बाद से ही शिक्षकों का उपयोग जनगणना, चुनाव ड्यूटी आदि कार्यों में किया जाता रहा है. पालतू पशुओं की गणना व पोलियो टीकाकरण में भी उनकी मदद ली जाती है. यह ऐसा शिक्षित भरोसेमंद वर्ग है जिसका सरकार जब चाहे, इस्तेमाल कर सकती है. जब शिक्षा का अधिकार संबंधी कानून बनाया जा रहा था तब उम्मीद थी कि शिक्षकों को इस तरह के गैरशिक्षकीय कार्य से मुक्त कर दिया जाएगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ. इस कानून के अनुच्छेद 27 में शिक्षकों का चुनाव संबंधी कार्यों में इस्तेमाल करने की अनुमति दी गई. जब शिक्षकों को चुनावी ड्यूटी में लगाया जाता है तो प्राचार्य या हेडमास्टर को स्कूल की जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है. इससे शिक्षा क्षेत्र को नुकसान पहुंचता है. बच्चों को पढ़ाना, रिवीजन कराना, परीक्षा लेना, कार्यक्रमों व इवेंट के लिए बच्चों को तैयार करना, रिकार्ड कीपिंग जैसे काम पूरी तरह लटक जाते हैं. बच्चों की पढ़ाई पिछड़ जाती है. चुनाव ड्यूटी के लिए सरकार कोई वैकल्पिक व्यवस्था क्यों नहीं करती? इसमें शिक्षकों की बजाय सुशिक्षित बेरोजगारों को प्रशिक्षण देकर काम कराया जा सकता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

सरकार ने परोसी गरम जलेबी मेरा पिया घर आया ओ रामजी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, आपको याद होगा कि लगभग 25 साल पहले फिल्म 'हम आपके हैं कौन' में माधुरी दीक्षित ने नाचते-थिरकते हुए गाया था- मेरा पिया घर आया ओ रामजी ! अब सरकार ने देश के किसानों को जी-राम-जी योजना का उपहार दिया है. इससे खुश होकर किसानों को गाना चाहिए- रामजी पधारे, सुंदर नगरिया में रामजी पधारे.'

हमने कहा, 'यह उपहार नहीं बल्कि पुरानी मनरेगा योजना का नया अवतार है. इसे बड़े तेवर के साथ सरकार ने नए कलेवर में पेश किया है. विपक्ष की तकरार पर ध्यान न देकर इस बदलाव को स्वीकार कीजिए. जरा सोचिए कि इस योजना में राम का नाम है. कहा गया है- कलियुग केवल नाम अधारा. कलियुग में सबसे बड़ा आधार राम नाम ही है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राम नाम कहां नहीं है ! ऐसे ठगों को पहचानिए जिनका काम है- राम राम जपना, पराया माल अपना ! मौका पाते ही सरकारी खजाना लूटनेवाले नेता मानकर चलते हैं- राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट,

अंतकाल पछताएगा जब प्राण जाएंगे छूट ! कितने ही लोगों का स्वभाव ऐसा होता है कि मुंह में राम, बगल में छुरी. बापू के हत्यारे नाथूराम गोडसे के नाम में भी राम लगा था.'

हमने कहा, 'आप जलेबी के समान अपनी बातों को गोल-मोल घुमा रहे हैं. आपको मालूम होना चाहिए कि राम तेरे कितने नाम. जग में सुंदर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ! लोग लंबे समय से बच्चे के नाम में राम लगाते रहे हैं जैसे कि रामकिसन, रामकिशोर, रामखिलावन, रामअवध, रामकिंकर, रामप्रसाद, रामनारायण, रामविलास, रामनिवास, रामजीवन, रामनिहोर, रामबहोर, रामपूजन, रामगणेश, रामचरण, रामतीर्थ, रामदीन, रामलाल, रामचंद्र, राममूर्ति, रामयश, रामबरन, रामसहाय, रामकृपाल. इसके अलावा सीताराम, जानकीराम, बाबूराम, राजाराम, आत्माराम, तुलसीराम, कृपाराम, मायाराम, दाताराम, घासीराम जैसे कितने ही नाम हिंदी भाषी प्रदेशों में मिलेंगे. हरियाणा की राजनीति में दलबदलुओं को आयाराम-गयाराम कहते थे. मोदी सरकार के रहते राममंदिर का सपना साकार हो गया और अब किसानों को भी जी-राम-जी योजना मिल गई.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जब हमें फिल्म नटवरलाल का गाना याद आ गया- मीठी-मीठी बातों से किसी का पेट भरता नहीं, राम का भरोसा हो तो कोई भूखा मरता नहीं !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 1217 - डॉ. सागर खादीवाला

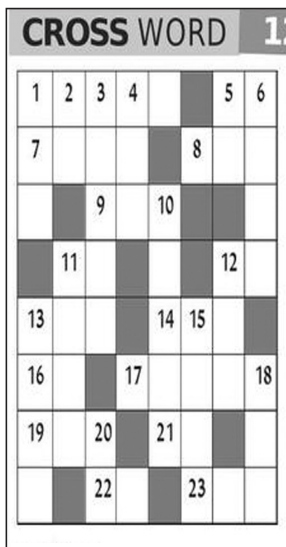

जंगल, बाग 3. उत्तम आचरण, अच्छा चाल-चलन 4. सिक्खों के आदि गुरु जिनका जन्म कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा संवत 1526 को और परलोकवास आश्विन कृष्णा दशमी संवत् 1597 को हुआ 5. एक चिकना कोमल पदार्थ जिससे मधुमक्खियों का छत्ता बना होता है 6. शब्दों का ठीक प्रकार से उच्चारण न करने के कारण रुक-रुक कर बोलना 10. जौहरी 11. नूतनता, नयापन 12. बड़ी टोकरी 13. राजा, सृष्टिकर्ता (सं.) 15. चक्कर खाना, चकित होना या करना 18. रगड़ने की क्रिया या भाव, अत्यधिक परिश्रम करना 20. कौआ, बोतल शीशी आदि की डाट

बाएं से दाएं
1. सूर्य 5. सांसारिक वस्तुओं को सब कुछ समझना, प्रेम, ममता 7. कुल, वंश 8. प्रकाश, आभा, कांति 9. चकवा 11. पुरुष जाति का 12. मंत्र-तंत्र का प्रयोग, जादू 13. किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण, कुशल 14. पचाने अथवा पकाने वाला 16. प्राण, जीवन, ज्ञान 17. स्थिर, कायम (उर्दू) 19. झंडा, ध्वजा 21. ककड़ी 22. पहरा, भ्रमण, घूमना (उर्दू) 23. नाक का एक रोग

ऊपर से नीचे
1. आडंबर, ऊपरी तड़क-भड़क 2.

Solution 12116

मुं	ह	त		बि	ना		मं
सा		ह	थि	या	र	बं	द
फि	र	की		बा		द	
र		का	नू	न		न	ख
	स	त	त		आ	वा	स
द	मा		न	ट	व	र	
वा	चा	ल			श्य		सो
त	र		क	ड़	क	ड़ा	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी. पद का लाभ प्राप्त होगा. व्यवसायिक मामलों में स्थिति सामान्य रहेगी. धार्मिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वर्ष के अन्त में शत्रु कष्ट होगा, चिन्ता रहेगी, किन्तु निवारण भी होगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं व्यय से बचने का प्रयास करें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पद का लाभ प्राप्त होगा. सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को शत्रु कष्ट होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को मांगलिक कार्यों में खर्च होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को उन्नति के योग है. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यश और सम्मान में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये यश और पुरूषार्थ बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक महत्वाकांक्षी, बुद्धिमान साहसी एवं उग्र स्वाभाव का होगा, शिक्षा दीक्षा अच्छी रहेगी, नौकरी में सफलता प्राप्त होगी, इसमें नेतृत्व करने की भावना अधिक रहेगी, अपने कार्यो के प्रति सजग, न्यायप्रिय होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

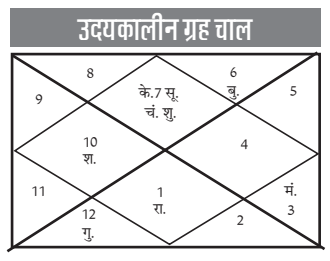

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 पौष शुक्ल द्वितीया चन्द्रवासरे दिन 9/40, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रे रात 4/41, ध्रुव योगे शाम 4/42, कौलव करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार धनु दिन 9/32 से मकर, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल द्वितीया को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, के भाव में तेजी होगी, गेहूँ, जौ, चना, गुड, अरहर के भाव में मंदी होगी, वायदा विचार आज पिछले दिन के बने भाव में महत्वपूर्ण उठाव रहेगा. भाग्यांक 2028 है.

मेष- धार्मिक यात्रा हो सकती है, रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, कार्य में इच्छानुसार सफलता मिलेगी.

वृषभ- उच्च अध्ययन में बडी सफलता प्राप्त होगी, व्यापारिक साझेदारी लाभकारी रहेगी, नौकरी संबंधी प्रयासों में सफलता मिलेगी, राजकीय सहयोग मिलेगा.

मिथुन- व्यापारिक यात्रा का योग है, रोकटोक के चलते कार्यस्थल पर विवाद संभव है, धार्मिक सत्संग से प्रसन्नता रहेगी, इच्छा के अनुकूल कार्य बनेंगे.

कर्क- लोग दबाव बनाने का प्रयास करेंगे, विवादास्पद मामले सुलझेंगे, मनोवांछित कार्यो में सफलता मिलेगी, मांगलिक कार्य बनेंगे.

सिंह- कारोबारी विस्तार की योजना सफल होगी,जिद में लिये फैसले जी का जंजाल बन सकते हैं, व्यवसायिक व्यस्तता रहेगी, अतिथि आगमन होगा.

कन्या- भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ मिलेगा, ले-देकर काम कराने की योजना सफल होगी, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, कार्य की अधिकता रहेगी.

तुला- बैचारिक गतिरोध दूर होंगे, कारोबारी यात्रा सुखद रहेगी, संतान के कारण आपको भावनात्मक पीड़ा हो सकती है, नवीन प्रयासों में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक- समय के साथ तौर तरीकों में बदलाव कर लें, लाभ अच्छा मिलेगा, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारियों की मदद मिलेगी.

धनु- धीमी गति से चल रही योजना में तेजी आयेगी,अधिकारियों से मेलजोल लाभदायक है, साहसिक प्रयत्नों से अभीष्ट कई प्राप्ति होगी.

मकर- जो काम सोच के निकलें हैं, उसे पूरा करने में किसी का सहयोग मिलेगा, आकस्मिक खर्च होगा, नवीन मैत्री संबंधों में सतर्कता बांछनीय.

कुम्भ- घरेलू मामले सुलझेंगे, बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर खर्च होगा, कानूनी मामले सुलझेंगे, समय पर सोचे हुये कार्यों की पूर्ति होगी. निजी कार्यों में सफलता मिलेगी.

मीन- आकस्मिक लाभ का अवसर मिलेगा, भावुकता में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, आकस्मिक खर्च होगा, पारिवारिक सुख सुविधा प्राप्त होगी.

SUDOKU 7249

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7248

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7